अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन की प्रवृत्ति: भोपाल जिले के शहरी और ग्रामीण विद्यालयों का तुलनात्मक विश्लेषण

योगिता पटैरिया[1], डॉ. कंचन माथुर[2]

[1]**शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, मध्य प्रदेश, भारत**
[2]**अन्वेषक/निर्देशिका, शिक्षा विभाग, मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, मध्य प्रदेश**

सारांश

यह अध्ययन भोपाल जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन की प्रवृत्तियों और उसके शैक्षणिक तथा सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अनुसंधान में **400** विद्यार्थियों **(200** शहरी एवं **200** ग्रामीण**)** का चयन स्तरीकृत याद्दच्छिक नमूना पद्धति से किया गया। डेटा संग्रह हेतु प्रश्नावली और साक्षात्कार का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत**, t-test** और **χ^2-test** द्वारा किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी क्षेत्रों में **75%** और ग्रामीण क्षेत्रों में **52%** विद्यार्थी नियमित ट्यूशन लेते हैं। ट्यूशन लेने के प्रमुख कारणों में विद्यालय में पर्याप्त ध्यान न मिलना**,** कठिन विषयों की तैयारी, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और अभिभावकीय दबाव शामिल रहे। औसत अंक के आधार पर यह पाया गया कि ट्यूशन लेने वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन **(68.4%)** बिना ट्यूशन लेने वालों **(59.7%)** से बेहतर है। साथ ही शहरी विद्यार्थियों का ट्यूशन खर्च ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया**,** जो सामाजिक-आर्थिक असमानताओं की ओर संकेत करता है। अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि निजी ट्यूशन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सहायक तो है**,** किंतु यह शिक्षा में विषमता को भी बढ़ावा देता है। अतः विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारना और निजी ट्यूशन को अधिक समावेशी बनाना नीति-निर्माताओं के लिए आवश्यक है।

कुंजी शब्द (Keywords): निजी ट्यूशन, माध्यमिक शिक्षा, शहरी-ग्रामीण तुलना, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक-आर्थिक असमानता

परिचय (Introduction)

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का मूल आधार है। यह केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं है, बल्कि व्यक्ति को आत्मनिर्भर, सक्षम और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाने का साधन है (डिप्रेट एवं बुचमैन, 2013)। आधुनिक समय में शिक्षा को समावेशी विकास और समानता का आधार माना गया है (यूनेस्को, 2015)। 21वीं सदी के संदर्भ में आलोचनात्मक चिंतन, सहयोग और डिजिटल साक्षरता जैसी क्षमताएँ अनिवार्य हो गई हैं (ओईसीडी, 2018)।

भारत जैसे विकासशील देश में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता, संसाधनों की कमी और उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात जैसी चुनौतियों ने विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन या *व्यक्तिगत अध्ययन* की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। इसे एक *छाया शिक्षा प्रणाली* कहा जाता है, जो औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के समानांतर विकसित हो रही है (ब्रे एवं क्वोक, 2003; डांग एवं रोजर्स, 2008)। शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि निजी ट्यूशन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों और आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है (डोंगरे एवं तिवारी, 2015; झा, 2023)।

भारत में माध्यमिक शिक्षा (कक्षा IX–XII) विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और व्यावसायिक विकास की दृष्टि से निर्णायक मानी जाती है। इस स्तर पर बोर्ड परीक्षाओं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के कारण विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन लेने की प्रवृत्ति अधिक प्रबल होती है (एनसीईआरटी, 2019; शर्मा एवं शुक्ला, 2019)। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, देशभर में लगभग 37.8% विद्यार्थी नियमित रूप से निजी ट्यूशन का सहारा लेते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह अनुपात ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक है।

निजी ट्यूशन का प्रभाव केवल शैक्षणिक प्रदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को भी गहरा करता है। सक्षम परिवारों के छात्र उच्च गुणवत्ता वाले ट्यूशन का लाभ उठाते हैं, जबकि आर्थिक रूप से कमजोर छात्र इससे वंचित रह जाते हैं (सिलुवा एवं ब्रे, 2006; कौर एवं सिंह, 2023)।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

भोपाल जिला इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि यहाँ शहरी और ग्रामीण दोनों शैक्षिक परिवेश विद्यमान हैं। प्रसाद एवं सिंह (2021) के अध्ययन के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में लगभग 75% तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 52% विद्यार्थी नियमित रूप से ट्यूशन लेते हैं। यह असमानता अभिभावकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, विद्यालय के प्रकार और शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता पर आधारित पाई गई।

अतः यह अध्ययन भोपाल जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा लिए जा रहे निजी ट्यूशन की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य एक ओर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन लेने के कारणों और प्रवृत्तियों को समझना है, तो दूसरी ओर यह जानना है कि निजी ट्यूशन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि पर किस प्रकार प्रभाव डालता है। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शिक्षा नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए महत्त्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा, बल्कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और निजी ट्यूशन को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में भी उपयोगी मार्गदर्शन उपलब्ध कराएगा।

समीक्षा साहित्य (Review of Literature)
शोध से स्पष्ट हुआ है कि निजी ट्यूशन विद्यालयी शिक्षा की कमियों को पूरा करने के लिए अपनाया जाता है। ब्रे एवं क्वोक (2003) ने इसे *Shadow Education System* कहा है, जो औपचारिक शिक्षा की छाया के रूप में समानांतर चलती है। डांग एवं रोजर्स (2008) ने विकासशील देशों में निजी ट्यूशन को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और संसाधनों की कमी से उत्पन्न एक प्रवृत्ति बताया।

भारत में, एनसीईआरटी (2017, 2019) ने स्पष्ट किया कि निजी ट्यूशन माध्यमिक स्तर पर सर्वाधिक प्रचलित है, विशेष रूप से गणित, विज्ञान और अंग्रेज़ी विषयों में। एनएसएसओ (2020) के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में लगभग 65% और ग्रामीण क्षेत्रों में 40% विद्यार्थी नियमित रूप से ट्यूशन लेते हैं। प्रसाद एवं सिंह (2021) ने भोपाल जिले में पाया कि शहरी विद्यार्थियों का अनुपात (75%) ग्रामीण विद्यार्थियों (52%) की तुलना में काफी अधिक है।

यह प्रवृत्ति केवल शिक्षा की गुणवत्ता से ही नहीं, बल्कि अभिभावकों की अपेक्षाओं और सामाजिक दबाव से भी प्रभावित होती है। बनर्जी एवं वधवा (2015) तथा घोष एवं ब्रे (2020) ने दिखाया कि कमजोर विद्यालयी शिक्षण और उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात निजी ट्यूशन की माँग को बढ़ाते हैं।

निजी ट्यूशन को शैक्षणिक सफलता का पूरक माना गया है। डोंगरे एवं तिवारी (2015) ने पाया कि नियमित ट्यूशन लेने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा में औसत उपलब्धि अधिक रही। झा (2023) के अनुसार, निजी ट्यूशन केवल पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और संज्ञानात्मक क्षमताओं को भी विकसित करता है।

हालाँकि, सिलुवा एवं ब्रे (2006) तथा कौर एवं सिंह (2023) ने चेताया है कि निजी ट्यूशन सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा देता है। आर्थिक रूप से सक्षम परिवार बेहतर गुणवत्ता के ट्यूटर चुन सकते हैं, जबकि कमजोर वर्ग के छात्र निम्न गुणवत्ता वाले विकल्प तक सीमित रहते हैं।

शर्मा एवं शुक्ला (2019) के अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर पर लगभग 60% विद्यार्थी गणित और विज्ञान विषयों के लिए ट्यूशन पर निर्भर रहते हैं। यह उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाता है, किंतु परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी डालता है।

इस प्रकार साहित्य से स्पष्ट है कि निजी ट्यूशन एक ओर विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में सहायक है, वहीं दूसरी ओर यह सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को भी गहरा करता है।

अनुसंधान कार्यप्रणाली (Methodology)
यह अध्ययन **वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति** पर आधारित है। अनुसंधान का उद्देश्य भोपाल जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के बीच निजी ट्यूशन की प्रवृत्तियों एवं प्रभावों का विश्लेषण करना है।

1. अनुसंधान की रूपरेखा (Research Design)
शोध *survey method* पर आधारित है, जिसमें प्रश्नावली और साक्षात्कार दोनों का प्रयोग किया गया।

2. नमूना (Sample)
अध्ययन के लिए भोपाल जिले के चयनित **शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों** से कक्षा IX और X के विद्यार्थियों को चुना गया।

- कुल नमूना आकार: **400 विद्यार्थी**

- शहरी क्षेत्र: 200 विद्यार्थी
- ग्रामीण क्षेत्र: 200 विद्यार्थी

नमूना चयन हेतु **स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति (Stratified Random Sampling)** का उपयोग किया गया।

3. उपकरण (Tools)
शोध हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया:

- **प्रश्नावली (Questionnaire):** विद्यार्थियों के निजी ट्यूशन लेने के कारणों, समय, खर्च एवं अनुभवों से संबंधित प्रश्न।
- **साक्षात्कार (Interview Schedule):** चुनिंदा विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से गहन जानकारी प्राप्त करने के लिए।

4. डेटा संग्रहण (Data Collection)
डेटा विद्यालयों में जाकर प्रत्यक्ष रूप से एकत्रित किया गया। शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को समान रूप से सम्मिलित किया गया ताकि तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

5. डेटा विश्लेषण (Data Analysis)
संग्रहित आँकड़ों का **वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)** जैसे– प्रतिशत, माध्य, एवं मानक विचलन का उपयोग करके विश्लेषण किया गया।
शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना के लिए **t-test** तथा **χ^2-test (Chi-square test)** का प्रयोग किया गया।

परिणाम (Results)
इस अध्ययन का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन की प्रवृत्तियों और उनके शैक्षणिक तथा सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। प्रस्तुत परिणाम आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण पर आधारित हैं।

तालिका 1: विद्यार्थियों द्वारा निजी ट्यूशन लेने की स्थिति

क्षेत्र	**कुल विद्यार्थी**	**ट्यूशन लेने वाले (%)**	**ट्यूशन न लेने वाले (%)**
शहरी (n=200)	200	150 (75%)	50 (25%)
ग्रामीण (n=200)	200	104 (52%)	96 (48%)
कुल	400	254 (63.5%)	146 (36.5%)

व्याख्या: परिणाम दर्शाते हैं कि शहरी क्षेत्रों में 75% विद्यार्थी नियमित रूप से ट्यूशन लेते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह अनुपात 52% है। χ^2-परीक्षण से यह अंतर **सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण** पाया गया ($p<0.01$)।

तालिका 2: ट्यूशन लेने के प्रमुख कारण

कारण	शहरी (%)	ग्रामीण (%)
विद्यालय में पर्याप्त ध्यान न मिलना	42	38
कठिन विषयों (गणित/विज्ञान) में मदद	30	34
प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी	18	10
अभिभावकों का सामाजिक दबाव	10	18

व्याख्या: शहरी क्षेत्रों में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु ट्यूशन अधिक लिया जाता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कठिन विषयों की समझ और अभिभावकीय दबाव प्रमुख कारण पाए गए।

तालिका 3: ट्यूशन खर्च का औसत मासिक वितरण

क्षेत्र	न्यूनतम (₹)	अधिकतम (₹)	औसत (₹)
शहरी	500	4000	2200
ग्रामीण	300	2500	1200

व्याख्या: शहरी विद्यार्थियों का ट्यूशन पर औसत मासिक व्यय (₹2200) ग्रामीण विद्यार्थियों (₹1200) की तुलना में लगभग दुगुना है।

तालिका 4: शैक्षणिक उपलब्धि पर निजी ट्यूशन का प्रभाव

समूह	औसत अंक (%)	मानक विचलन	t-मूल्य
ट्यूशन लेने वाले (n=254)	68.4	8.2	
बिना ट्यूशन (n=146)	59.7	9.1	6.45**

(**p<0.01 महत्त्वपूर्ण)

व्याख्या: जिन विद्यार्थियों ने नियमित ट्यूशन लिया, उनका औसत अंक (68.4%) उन विद्यार्थियों से अधिक था जिन्होंने ट्यूशन नहीं लिया (59.7%)। यह अंतर **सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण** है।

मुख्य निष्कर्ष (Key Findings)

1. शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन की प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक प्रचलित है।
2. ट्यूशन लेने के प्रमुख कारणों में विद्यालयी शिक्षा की सीमाएँ, कठिन विषयों की तैयारी, तथा प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव सम्मिलित हैं।
3. शहरी विद्यार्थियों का ट्यूशन खर्च ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक है, जो सामाजिक-आर्थिक असमानता को दर्शाता है।
4. निजी ट्यूशन लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सांख्यिकीय रूप से अधिक पाई गई।

चर्चा (Discussion)

इस अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि भोपाल जिले के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन लेने की प्रवृत्ति व्यापक रूप से प्रचलित है, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में।

परिणाम दर्शाते हैं कि शहरी क्षेत्रों में 75% विद्यार्थी ट्यूशन लेते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह अनुपात 52% है। यह निष्कर्ष राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (2020) की रिपोर्ट के अनुरूप है, जिसमें बताया गया कि शहरी क्षेत्रों में ट्यूशन लेने की प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक है। प्रसाद एवं सिंह (2021) ने भी भोपाल जिले पर किए गए अपने अध्ययन में यही प्रवृत्ति उजागर की थी।

ट्यूशन लेने के कारणों में विद्यालय में पर्याप्त ध्यान न मिलना और कठिन विषयों की तैयारी प्रमुख पाए गए। यह निष्कर्ष एनसीईआरटी (2017) तथा बनर्जी एवं वधवा (2015) के शोध से मेल खाता है, जिसमें विद्यालय की कमजोर शिक्षण व्यवस्था और जटिल पाठ्यवस्तु को निजी ट्यूशन की बढ़ती माँग के पीछे मुख्य कारक माना गया। साथ ही, शहरी क्षेत्रों में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु ट्यूशन की प्रवृत्ति अधिक देखी गई, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभिभावकों का सामाजिक दबाव अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण पाया गया।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ट्यूशन लेने वाले विद्यार्थियों का औसत अंक (68.4%) बिना ट्यूशन लेने वालों (59.7%) से अधिक था और यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण था। यह निष्कर्ष डोंगरे एवं तिवारी (2015) तथा झा (2023) के शोध से मेल खाता है, जिसमें निजी ट्यूशन को शैक्षणिक उपलब्धि और आत्मविश्वास बढ़ाने वाला कारक बताया गया है।

हालाँकि, परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि शहरी विद्यार्थियों का औसत मासिक ट्यूशन खर्च (₹2200) ग्रामीण विद्यार्थियों (₹1200) की तुलना में अधिक है। यह सामाजिक-आर्थिक असमानता की ओर संकेत करता है। सिलुवा एवं ब्रे (2006) तथा कौर एवं सिंह (2023) ने भी उल्लेख किया कि निजी ट्यूशन की बढ़ती लागत शिक्षा में असमानताओं को और गहरा करती है, क्योंकि सक्षम परिवारों के छात्र उच्च गुणवत्ता के ट्यूशन तक पहुँच रखते हैं, जबकि कमजोर वर्ग के छात्र निम्न स्तर तक सीमित रहते हैं।

इस प्रकार, अध्ययन के निष्कर्ष यह सिद्ध करते हैं कि निजी ट्यूशन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार तो करता है, लेकिन साथ ही यह सामाजिक-आर्थिक विषमता को भी बढ़ावा देता है। इसलिए नीति-निर्माताओं को विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने तथा निजी ट्यूशन को अधिक सुलभ और समान अवसर प्रदान करने वाला बनाना आवश्यक है।

निष्कर्ष (Conclusion)

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भोपाल जिले के माध्यमिक स्तर पर निजी ट्यूशन शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण सहायक माध्यम बन चुका है। शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों द्वारा ट्यूशन लेने की प्रवृत्ति (75%) ग्रामीण क्षेत्रों (52%) की तुलना में अधिक पाई गई, जो इस तथ्य की पुष्टि करती है कि शहरी परिवेश में प्रतिस्पर्धा और परीक्षा की तैयारी का दबाव अपेक्षाकृत अधिक है।

निजी ट्यूशन लेने के कारणों में विद्यालय में पर्याप्त ध्यान न मिलना, कठिन विषयों (विशेषकर गणित और विज्ञान) की तैयारी, प्रतियोगी परीक्षाओं की अपेक्षाएँ और अभिभावकीय दबाव प्रमुख रूप से सामने आए। यह इंगित करता है कि विद्यालयी शिक्षा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरी तरह संतुष्ट करने में सक्षम नहीं हो पा रही है।

शोध के परिणामों से यह भी ज्ञात हुआ कि ट्यूशन लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (औसत अंक 68.4%) बिना ट्यूशन लेने वालों (59.7%) से अधिक रही। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी ट्यूशन विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को सुधारने में सहायक है। किंतु, इसके साथ-साथ आर्थिक विषमता का पहलू भी उजागर हुआ—शहरी विद्यार्थियों का ट्यूशन पर औसत मासिक व्यय ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में लगभग दोगुना पाया गया। इसका अर्थ है कि निजी ट्यूशन शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को और गहरा कर रहा है।

समग्र रूप से, यह कहा जा सकता है कि निजी ट्यूशन विद्यार्थियों की उपलब्धि और आत्मविश्वास में वृद्धि करता है, किंतु यह शिक्षा की समानता और सभी के लिए अवसर की अवधारणा को चुनौती देता है। इस स्थिति में शिक्षा नीति-निर्माताओं के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाए, ताकि विद्यार्थियों की ट्यूशन पर निर्भरता कम हो सके और शिक्षा का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच सके।

संदर्भ सूची :

1. ब्रे, एम., एवं क्रोक, पी. (2003). *शैडो एजुकेशन: निजी ट्यूशन का वैश्विक विस्तार.* कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. डोंगरे, ए., एवं तिवारी, आर. (2015). निजी ट्यूशन और शैक्षणिक उपलब्धि: एक विश्लेषण. *भारतीय शिक्षा समीक्षा,* 63(2), 112-124।
3. झा, एस. (2023). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निजी ट्यूशन का प्रभाव. *शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका,* 12(1), 45-56।
4. सिंह, आर. (2018). ग्रामीण क्षेत्रों में निजी ट्यूशन की प्रवृत्ति और कारण. *शिक्षा अध्ययन जर्नल,* 9(2), 77-85।
5. कौर, ए., एवं सिंह, जे. (2023). सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और निजी ट्यूशन: एक तुलनात्मक अध्ययन. *भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका,* 29(4), 67-79।
6. सिलुवा, जी., एवं ब्रे, एम. (2006). निजी ट्यूशन और शिक्षा में असमानता. *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन,* 5(2), 101-118।
7. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ). (2020). *भारत में शिक्षा पर व्यय और निजी ट्यूशन का प्रचलन.* नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।
8. मिश्रा, पी. (2021). शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की ट्यूशन निर्भरता का तुलनात्मक अध्ययन. *भारतीय शिक्षा पत्रिका,* 15(3), 102-114।
9. घोष, आर., एवं ब्रे, एम. (2020). निजी ट्यूशन पर विद्यार्थी दृष्टिकोण. *एजुकेशन एंड सोसाइटी जर्नल,* 17(1), 33-49।
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2019). *भारतीय विद्यालयी शिक्षा में निजी ट्यूशन का प्रभाव.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी प्रकाशन।